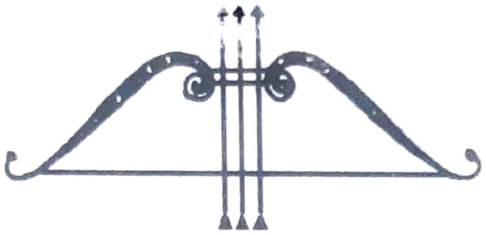
।। सप्तम पाठ ।।



अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पाँचो पाण्डव बैठे भाई । सभा मोहनी अति सुहाई ।।
युद्ध रचना हुई कैस देखो । आपस परी की बात अनेकों ।।
अर्जुन ने तब वचन सुनाया । लीलाधर की है यह माया ।।
कौन जानता लीला प्यारी । मनमोहन की महिमा न्यारी ।।
खेल उन्होने ही है रचाया । निमित्त मात्र हमको है बनाया ।।

कर्ण द्रोण थे अति बलवानी । भीष्म जी की तीखी निशानी ।।
वो मरने को कभी नहीं आते । अपनी निश्चय हार कराते ।।
श्याम बिहारी लीलाधारी । खेल रचे है कृष्ण मुरारी ।।
युद्धिष्ठिर जी ने भी फरमाया । कौन लखेगा उनकी माया ।।
मुरली मनोहर अंतरयामी । घट घट वासी हमरे स्वामी ।।
रथ का हकैया ही कहलाता । माया को भी रचता जाता ।।
अर्जुन का भी भरम भगाया । हृदय माँही ज्ञान जगाया ।।

दोहा - भीम गरजना कर उठे, क्या करते हो बात ।
समझदार होकर भी भैया, सांझ को कहते प्रभात ।। क ।।
अनहोनी क्यों बोलते, आँखो देंखा हाल ।
मेरी गदा रण में विचली थी, डर कर भागा काल ।। १५६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
युद्ध शुरु हमने ही किया था । विजय पताका हाथ लिया था ।।
जब मेरी गदा घूमती रण में । बैरी पीठ दिखाता क्षण में ।।
एक को मारूँ सौ मर जावें । बाकी दहशत खा भाग जावें ।।
दुर्योधन की जाँघ थी तोड़ी । दुःशासन की छाती फोड़ी ।।
दुर्योधन जब जोर चिल्लाया । मैंने मुक्का मुँह पे जमाया ।।
जांघ को चूर चूर कर दीन्हा । अपने बल से सब कुछ कीन्हा ।।
दुशासन मेरे सामने आया । मैंने गदा का वार चलाया ।।
धरती ऊपर पटक लिया था । छाती फाड़ के लहू पिया था ।।
मेरी गदा में कमाल भरा था । रण दल हा हा करके डरा था ।।
जब मुझे रण में क्रोध था आया । करके गर्जना ताव था खाया ।।

दुश्मन मर गये दहशत खाकर । काफी भागे पीठ दिखाकर ।।

दोहा - युधिष्ठिर ने धीरज दिया, शान्त शान्त बलवान ।
तुम नहीं जानो कृष्ण की माया, ये खुद है भगवान ।। क ।।
भीष्म पीतामह कैसे मरे, तुम को नाहीं ज्ञान ।
द्रोण बली था गुरु हमारा, मरा कैसे बलवान ।। १५७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
भीम को क्रोध घनेरा छाया । खड़ा होय कर भेद बताया ।।
अर्जुन जैसा तीर निशानी । रण में नाहीं था बलवानी ।।
गुरु से चेला चतुर होवत है । सृष्टि सारी यही कहवत है ।।
अर्जुन के जब तीर चले थे । सही निशाने से न टले थे ।।
मेरी गदा में शक्ति भारी । सन्मुख डटे नहीं बलधारी ।।
तुम कहते हो कृष्ण की माया । रण में जूझी मेरी काया ।।
कृष्ण कृष्ण सब कोई उच्चारो । मेरी गदा को क्यों न निहारो ।।
अर्जुन ने जब तीर सम्भाला । काल भी भागा लेकर टाला ।।
कौन बली जो सन्मुख लड़ता । उन तीरों के आगे अड़ता ।।
श्याम श्याम ही सभी पुकारो । अर्जुन भीम को क्यों न उच्चारो ।।

दोहा - अर्जुन तब कहने लगा, तुम नहीं समझे बात ।
श्याम बिहारी लीलाधारी, ये जगती के नाथ ।। क ।।
इनकी मर्जी के बिना, हिले न तरवर पात ।
थोड़ी देर रुक करके देखो, पलक घड़ी कई स्यात ।। १५८ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मनमोहन बोले मुसकाकर । भीम को धीरज दे समझाकर ।।
तुमरी गदा ने कमाल दिखाया । रणदल को भी तूने हटाया ।।

महाबली हो हे बलवानी । अर्जुन भी है अटल निशानी ।।
अर्जुन भीम ने युद्ध को जीता । जिसने सुनी थी ज्ञान की गीता ।।
दुर्योधन को तुमने पछाड़ा । दुशासन को चीर के फाड़ा ।।
मानते हैं सब बात तुम्हारी । बलियों में हो तुम बलधारी ।।
जिसने देखी युद्ध की कहानी । बर्बरीक है सुत बलवानी ।।
वो जो कह दे सत्य ही जानो । उसको पंच सभी कोई मानो ।।
खम्भे पे बैठ के देखी माया । नेत्रों में मोहनी परछाया ।।
उससे फैसला अभी कराओ । भरम को मन से दूर भगाओ ।।
गर तुम्हें हो मंजूर कहानी । सब बतलावेगा बलवानी ।।
दिव्य ज्योति है शक्तिधारी । रण बीती देखी है सारी ।।
भीम ने गरब से वाणी उचारी । उसने देखी गदा हमारी ।।
उसका निश्चय फैसला मानूँ । वो कह दे वही सत्य ही जानूँ ।।

दोहा - मनमोहन जी चल दिये, गये खम्भ के पास ।
हे बलवानी नीचे पधारो करते तुमरी आस ।। क ।।
शीश मोहन के हाथ में, आए सभा के बीच ।
शीश में देख दिव्य परछाई, हर कोई जावे रीझ ।। १५९ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
मोहन जी ने वचन सुनाया । पिता तुम्हारा अति गरभाया ।।
रण की कहानी इनको सुनाओ । क्या क्या बीती भेद बताओ ।।
तुमने देखी रण की माया । पाकर मेरी निज परछाया ।।
जो कुछ देखा सभी बताओ । भीम के भरम को दूर भगाओ ।।
अर्जुन के चले तीर निशानी । गदा घुमाई भीम बलवानी ।।

कैसी बातें रण में बीती । किसने हारी किसने जीती ।।
वंशज तुमरा सुनना चाहवे । वीरता अपनी सभी सहरावे ।।
इनके भरम को दूर भगाओ । रण में बीती इनको सुनाओ ।।

दोहा - शीश का दानी हंस पड़ा, मोहनी ले मुस्कान ।
अभी सुनाऊँ भेद खोलकर, दयानिधे भगवान ।। क ।।
किसकी रण में जीत थी, किसकी हो गई हार ।
जीत का डंका किसने बजाया, अभी सुनाऊँ सार।। १६० ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
रुप चतुर्भुज धारी सुहाया । उसने दिखाई रण की माया ।।
शंख पदम और गदा हाथ में । इक उँगली में चक्र साथ में ।।
मोर मुकुट पीताम्बर साजे । हार गले में छन छन बाजे ।।
लाल नेत्र अग्नि निकले थी । चक्र गदा रण में विचले थी ।।
कट कट के सिर धरन पे गिरते । जिधर को चक्र गदा मुड़ फिरते ।।
हाहाकार मचा था भारी । फिरती अम्बे खप्पर धारी ।।
तेज खड्ग धारी न निवे थी । भर भर खप्पर लहू पीवे थी ।।
योगिनी और भैरव थे संग में । उग्र रुप धरे फिरते जंग में ।।
चक्र सरों को काटता फिरता । लाश पै लाश जिधर को घिरता ।।
मुण्डमाला पहने थी काली । अधर लहू की गहरी लाली ।।
लाल नेत्र और रुप है काला । भर रही खप्पर लहू का प्याला ।।
चक्र था आगे पीछे थी काली । भरती खप्पर जब हो खाली ।।
पिये लहू को दे किलकारी । संघारक था बना मुरारी ।।
देखी थी मैंने रण बीती । किसने हारी किसने जीती ।।

हे प्रभु तुमरी लीला प्यारी । क्या समझे कोई पुरुष अनारी ।।
पाँचो पाण्डव मग्न थे भारी । घूम रहे थे ये बलधारी ।।
रण के बीच में घूमते फिरते । देखा नाहीं इनको विचरते ।।

दोहा - भीम की गरदन झुक गई, सुन कर सांची बात ।
लीला तुमरी तुम ही जानो, हे जगती के नाथ ।। क ।।
हम तो सेवक आप के, कहो वही मंजूर ।
हर पल रहते साथ हमारे, कभी न समझो दूर ।। १६१ ।।

।। भगवान श्री कृष्ण का वरदान ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
जो जो देखी सत्य सुनाई । रण की कहानी सारी बताई ।।
यह सब लीला तुमरी माया । महाभारत युद्ध बोल रचाया ।।
बोले मोहन कृष्ण कन्हाई । अर्जुन को बातें समझाई ।।
कलियुग का जो जिकर सुनाया । हे अर्जुन तू समझ न पाया ।।
उसका भेद मैं अभी बताऊँ । हृदय तुम्हारे ज्ञान जगाऊँ ।।
किस विधि प्राणी सच्चे ज्ञानी । कैसे बनेंगे चतुर सुजानी ।।
विद्या लुप्त होवेगी सारी । बलहीन होंगे सब नर नारी ।।
उनकी रक्षा कौन करेगा । जो सतपथ हर कदम धरेगा ।।
शीश के दानी की ओर निहारो । फिर मेरे संग बात बिचारो ।।

दोहा - शीश के नेत्रों से भई, निज प्रभु की परछाई ।
दिव्य ज्योत की किरणाँ चमकी, देव शक्ति सकलाई ।। क ।।
आशीष दीनों कृष्ण जी, अमर शीश का दान ।
कलिकार में देव देहधारी, श्याम देव भगवान ।। १६२ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
चतुर्भुजा श्री श्याम की माया । रुप सांवरो मोहनी काया ।।

कलिकाल में देव ये शक्ति । अटल रहेगी हमरी भक्ति ।।
निज भक्तों को ढूँढ के लावे । उनको अपना दर्श दिखावे ।।
मेरा रुप है देव अवतारी । महा दानी होगा दातारी ।।
श्याम देव की ये परछाई । दिव्य किरण घुमे जग मांही ।।
अर्जुन ने तब दण्डवत कीन्ही । श्याम प्रभु की चरण रज लीन्ही ।।
श्याम देव जी देवैं दिखाई । श्याम रुप धरी देह सुहाई ।।
देवन चढ़के विमान पधारे । शंख पे शंख की ध्वनि उच्चारे ।।
फुलों की वर्षा हुई भारी । प्रगटे देव श्याम अवतारी ।।
सब देवन के बीच में आसन । श्याम देव करते हैं भाषण ।।
धन्य हुआ हूँ तुम में आकर । श्याम रुप छवि मोहनी पाकर ।।
कलियुग गर्जन जोर करेगा । तब यही रुप अवतार धरेगा ।।

दोहा - मोहन अर्जुन बीच में, बैठा शीश मुसकाय ।
कृष्ण कन्हैया कहने लगे, अर्जुन को समझाय ।। क ।।
अजर अमर ये शीश है, इसकी पूजा होय ।
मन वांछित फल पल में मिले, दुख दारिद्र सब खोय ।। १६३ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
यही शीश प्रगटे कलियुग में । अमर कहानी हर जुग जुग में ।।
जो कोई शीश के दर्शन पावे । शीश के दानी का गुण गावे ।।
जय श्री श्याम के शब्द उच्चारे । भक्त वही हें हमको प्यारे ।।
ये वरदान है अटल हमारा । कलि में प्राणी का यही सहारा ।।
अन्त में साक्षी रुप धरेंगे । लीले पर असवारी करेंगे ।।
बदन से चन्दन खुशबू आवे । रुप चतुर्भुज यही सुहावे ।।

गौड़ ब्राह्मण घर जन्म लेवेंगें । कलियुग का अवतार कहेंगे ।।
पापी का संहार करेंगे । सब में बुद्धि प्रकाश भरेंगे ।।
देव यही साक्षी अवतारी । लीले घोड़े की असवारी ।।

दोहा - मन मोहन ने आवाज दी, सब देवन गये आय ।
सब मुनियों को कथा सुनाई, लुहागर को बुलवाय ।। क ।।
ये शीश तुम्हारे सुपुर्द है, दग्ध स्थली धरो जाय ।
ये धरती उत्तम है भारी, मुझको अधिक सुहाय ।। १६४ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
लुहागर को सब समझाया । मोहन जी ने भेद बताया ।।
शीश पाला प्रगटे कलियुग में । वचन दिये हैं द्वापर युग में ।।
होगा राजा अति अभिमानी । करता डोलेगा मन मानी ।।
शीश पाल ने वचन उचारा । मरते मरते यही पुकारा ।।
जरासन्ध के आगे मुरारी । भागा था तू श्याम बिहारी ।।
मेरे आगे कभी न भागा । इतना लग गया मेरे दागा ।।
मैने उनको वचन सुनाया । धीरज देकर के समझाया ।।
कलियुग में मैं देव अवतारी । तब इच्छा पुरन हो तुम्हारी ।।
जबवह कलि में जन्म धरेगा । अभिमानी बड़ा पाप करेगा ।।
तीर्थ लुहागर तुम्हारा प्यारा । पापी जन को तारन हारा ।।
नदी रुपावती तुमरी धारा । स्नान करन से हो उद्धारा ।।
शीशपाल से पहले सुनियो । रुपावती में शीश को धरियो ।।
शीश प्रगट उस थार में होगा । यही हुक्म है तुमरे जोगा ।।

।। श्री श्याम जी का ।।

।। खाटू धाम में प्रगट होना ।।

।। भजन ।।

(तर्ज - बैठयो खाटू मँ लगाकर दरबार)

प्रगट्या खाटू की नगरी मँ बाबा श्याम, कलयुग मँ अवतार लियो,
सारी दुनियाँ में गुँजे है आँ को नाम, कलयुग मँ अवतार लियो ।। टेर ।।

रुपावती की धार मँ बहकर, श्याम शीश जद आयो,
खाटू कै खटवांग राज नै, चमत्कार दिखलायो,
धरती नीचै खुद को पतो बतायो श्याम, कलयुग मँ अवतार लियो ।।
प्रगटया....

खेतां चरती गाय धरा पर, एक जगह रुक जावै,
गाय कै थन से दूध की धार, खुद दी बहती जावै,
न्हावै दूध धार सै धरती नीचै श्याम, कलयुग मँ अवतार लियो ।।
प्रगटया....

घोर अचम्भो पाया सगला, धरती खोदण लाग्या,
आई इक आवाज धरा सै, श्याम प्रकट हो आग्या,
खाटू नगरी माँहि परचो दिन्यो श्याम, कलयुग मँ अवतार लियो ।।
प्रगटया....

नर-नारी सब पूजै देखो, मन्दिर खूब बणायो,
'रवि' कह्वै यो खाटू हालो, साँचो देव कहायो,
थे भी करल्यो आँकै चरणाँ मँ प्रणाम, कलयुग मँ अवतार लियो ।।
प्रगटया....

दोहा - लुहागर जी ने शीश को, दग्ध स्थली धरा जाय ।
मोहन पुरीद्वारका पहुँचे, सारा भेद बताय ।। क ।।
काफी अरसा बीत कर, कलियुग प्रगटा आय ।
दिन पर दिन होने लगे, घोर से घोर अन्याय ।। १६५ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
लुहागर जी ने मता उपाया । आ गया वक्त जो मोहन बताया ।।
दग्ध स्थली से शीश मंगाया । दिव्य ज्योत जो अपार माया ।।
विधि विधान से पूजा करके । रुपावती की धार में धरके ।।
प्रगट हुए हैं देव अवतारी । बाट जोवत तुमरी नर नारी ।।
मन वांछित फल सबको देना । निज भक्तों को अपना लेना ।।
चला शीश धारा में बहकर । धरती बीच की लहरों होकर ।।
खटवांग राजा की रजधानी । खाटू नगरी अति सुहानी ।।
नदी रुपावती मगन हो गयी । देव को पाकर लहरां खो गयी ।।
उजाड़ हो गई थी रजधानी । जंगल हो गया बियावानी ।।
गउएं घास चरन को आतीं । साँझ ढले घर वापस जातीं ।।
शीश आ गया जहाँ पे आना । ज्योत किरण से जग पहचाना ।।

दोहा - एक गाय नित आयकर, देती दूध पिलाय ।
मग्न होय पाबस कर भारी, लुल्ल लुल्ल पुँछ हिलाय ।। क ।।
साँझ ढले घर आय कर, ना हीं देती दुध ।
पाली जब निकालन बैठे, उछल के जावे कूद ।। १६६ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
पाली ने मन बात बिचारी । गाय थी अच्छी और दुधारी ।।
दूध क्यों नहीं हमको पिलावे । पास जावे तो मारन आवे ।।

एक दिन पीछा पाली कीन्हा । गाय ने दूध क्यों ना दीन्हा ।।
गाय देव के पास गई है । मग्न होय कर खड़ी हुई है ।।
दूध की धार थनों से बहती । पीती है क्या यहाँ की धरती ।।
दूध नहीं धरती पर देखा । हे ईश्वर ये क्या है लेखा ।।
जाट कुलारे जात कहावे । नगरी में जा भेद बतावे ।।
नर नारी चले बाँध कतारें । क्या लीला है सभी पुकारें ।।

दोहा - गाय दूध जहाँ देवती, भीड़ लगी है अपार ।
धरती बीज में है कोई माया, कहते सब नर नार ।। क ।।
धरती को खोदने लगे, ध्वनी हुई बलवान ।
मेरा शीश है देव अवतारी, कृष्ण का ये वरदान ।। १६७ ।।

अखण्ड ज्योत है अपार माया । श्याम देव की परबल छाया ।।
जलधारा से शीश निकाला । श्याम देव अहिला का लाला ।।
हे नर नारी मत घबराओ । मन्दिर मांही शीश धराओ ।।
पूजा ब्राह्मण से करवाओ । मन वांछित फल मुझसे पाओ ।।
सब ने मिल मन्दिर बनवाया । सिंहासन पर शीश धराया ।।
विधि विधान से पूजा करके । दर्शन किन्हें मन भर भर के ।।
गगन से वाणी हुई है भारी । श्याम देव हूँ मैं अवतारी ।।
जिस जलधार से मैं बह आया । श्याम कुण्ड धरी नाम सुहाया ।।

दोहा - शीश के दर्शन कर रहे, नर और नारी अनेक ।
मन की इच्छा पूर्ण होवे, जो कोई आवे देख ।। क ।।
नगरी मे आनन्द भयो, छाई खुशी अपार ।
ये है देव दयाल भारी, दानी बड़ दातार ।। १६८ ।।

।। भजन ।।

(तर्ज-आज हरि आये विदुर घर पावना....)

ठाठ है निराले खाटू के दरबार में ।। टेर ।।

चाँदी का सिंहासन सुन्दर, श्याम हमारे बैंठे जिस पर,
रंग-बिरंगे बागे तन पर, जँचते हं दातार के.... ठाठ है निराले.... ।। १ ।।

पाँच आरती नित की होती, जगमग करती अखण्ड ज्योति,
चमक रहे हैं हीरे मोती, बाबा के सिणगार में.... ठाठ है निराले.... ।। २ ।।

गोपीनाथ की मुरली बाजै, भोले सपरिवार विराजै,
दुनियाँ करती है दरवाजे, दरशन पवन कुमार के.... ठाठ है निराले.... ।। ३ ।।

दूर दूर से यात्री आवे, चरणों में अरदास लगावैं,
खाली झोली भर कर जावै, कमी नहीं भण्डार में.... ठाठ है निराले.... ।। ४ ।।

जिसका है दरबार से नाता, जीवन भर वो मौज उड़ाता,
'बिन्नू' जिसपे खुश है दाता, सुखी वही संसार में.... ठाठ है निराले.... ।। ५ ।।

।। भजन ।।

पावन कथा है श्याम की, नित कर लो रसपान,
कानों में अमृत घुले, सुमिरन से कल्याण,
कलयुग के अवतार की, कथा श्रवण जो पाय,
दुःख दारिद्र दूर हो, जीवन में सुख आय ।। टेर ।।

श्याम कथा का सुमिरन करना, नित उठ ध्यान प्रभु का धरना ।
कलयुग में अवतार लिया है, इस जग का कल्याण किया है ।

शीश का जिसने दान दिया है, कृष्ण ने ये वरदान दिया है ।
ज्यूँ-ज्यूँ कलयुग घोर पड़ेगा, श्याम तुम्हारा जोर बढ़ेगा ।

कृष्ण ने अपना नाम दिया है, अपने सम ही मान दिया है ।
हारे का साथी कहलाये, हरदम सबका साथ निभाये ।

जिसने भी है अर्ज लगाई, इसने सबकी आश पुराई ।
दर पे जाते जो भी सवाली, करते हैं सबकी रखवाली ।

तीन बाण है जिनकी शक्ति, हरदम करना उनकी भक्ति ।
खाटू नगरी में है विराजै, सिंहासन पर खूब है साजै ।

भीमबली के पुत्र कहाये, अहिलवती की कोख के जाये ।
पाण्हव कुल के हैं अवतारी, खाटू वाले श्याम बिहारी ।

कलयुग में सरनाम है, श्याम प्रभु का नाम,
साँसों के हर तार से, बोलो जय श्री श्याम ।
श्याम नाम ही सार है, इतना लेवो जान,
'शिब्बू-रवि' कहते हैं ये, साँचे है भगवान ।।

।। भजन ।।

पवन पुत्र हनुमान शरण तेरी आये है,
बालाजी महाराज शरण तेरी आये है,
करियो बेड़ो पार शरण तेरी आये है ।। टेर ।।

देखा सुना न तुम सा दानी,
तुमरी अजर अमर है कहानी
आन पड़े तेरे द्वार ।। शरण .... ।। १ ।।

है बलशाली अँजनी के लाला,
तू ही मेरा स्वामी तू ही रखवाला,
तू ही मेरा आधार ।। शरण .... ।। २ ।।

तुमने लाखो भक्त उबारे,
तुम बिन कारज कौन संवारे,
नैया है मझधार ।। शरण .... ।। ३ ।।

महावीर रणधीर बलवीरा,
हरियो म्हारी सारी पीड़ा,
तेरो साँचो है दरबार ।। शरण .... ।। ४ ।।

सालासर तेरो धाम अति प्यारो,
श्याम भक्तो ने लियो है सहारो,
करियो आन उद्धार ।। शरण .... ।। ५ ।।

।। आरती श्री श्याम बाबा जी की ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रुप धरे ।। ॐ जय ।।
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया-बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धुप अग्नि पद, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।
झाँझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय जय कार करे ।। ॐ जय ।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐ जय ।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'अलूसिंह' स्वामी, मनवांछित फल पावे ।। ॐ जय ।।
ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजे हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।
जांके बल से गिरिवर कापै, रोग दोष जांके निकट न झांके ।
अंजनी पुत्र सदा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।
लंका जारि असुर सब मारे, सियाराम जी के काज संवारे ।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, आनि संजीवन प्राण उबारे ।
पैठी पाताल तोरि जम-कारे, अहिरावण की भुजा उखारे ।
बाये भुजा सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब सन्त उबारे ।
सुरनर मुनिजन आरती उतारे, जय जय जय श्री हनुमान उचारे ।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजनी माई ।
जो हनुमान जी की आरती गावै, बसि वैकुण्ठ अमर पद पावै ।
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी किर्ति गाई ।

लाल देह लाली लसे, अरुधरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।।
पवन तनय संकट हरण मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीया सहित हृदय बसहु सुर भूप ।।

''सियावर रामचंद्र की जय''
''पवनसुत हनुमान की जय''

श्री श्याम स्तुती

हाथ जोड विनती करु सुणज्यो चित लगाय ।
दास आ गयो शरण में, रखियों इसकी लाज ।।
धन्य ढुंडारो देश है, खाटू नगर सुजान ।
अनुपम छबि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ।।
श्याम-श्याम मै रटूं, श्याम है जीवन प्राण ।
श्याम भक्त जग में बड़े, उनको करुँ प्रणाम ।।
खाटू नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम ।
फाल्गुन शुक्ला मेला भरे, जय जय बाबा श्याम ।।
फाल्गुन शुक्ला द्वादशी उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ।।
उमापति, लक्ष्मीपति, सीतापति श्रीराम ।
लज्जा सबकी राखियों खाटू के श्रीश्याम ।।
पान सुपारी इलायची, अत्तर, इत्तर सुगन्ध भरपूर ।
सब भक्तों की विनती, दर्शन देवो हुजूर ।।
'आलूसिंह' जो प्रेम से, धरे श्याम को ध्यान ।
श्याम भक्त पावे सदा, श्याम कृपा से मान ।।
जय श्री श्याम, जय श्री श्याम ।
खाटू वाले बाबा जय श्री श्याम ।।

पुष्पांजलि

तेरा तुझकों सौंपता अपना स्वामी जान ।
कर लोंगे स्वीकार तों बढेंगा मेरा मान ।।
तुम्हारी शक्ति के बिना हिले न कोई पात ।
जो प्रभू चाहें आप तो दिन भी हो जाए रात ।।
सूरज को क्यों कर भला दिपक कोई दिखाए ।
जों सारे संसार को चम चम है चमकाए ।।
वों सूरज भी आपसे पाता है आधार ।
कैसी महिमा मै लिखूं तेरी लखदातार ।।
मैं बालक अज्ञान हूँ आप गुणण की खान ।
अपनी शरण में लिजिए हे प्रभु दया निधान ।।
तुच्छ मेरा प्रयास है करो नाथ स्वीकार ।
त्रुटि यदि होवे कोई करना स्वयं सुधार ।।
सेवा पूजा बंदगी सभी आप के हाथ ।
हम तो कुछ नही जानते आप जानो श्री श्याम ।।
लज्जा मेरी राखिओ, खाटू के श्री श्याम ।
हम तो भोलें बालक है, आप जानो श्री श्याम ।।

卐 श्री श्याम वन्दना 卐

खाटू वाले श्याम बिहारी
कलिकाल में तेरी महिमा है न्यारी ।

हारे हुओं का तुम हो सहारा ।
कहलाये जग में प्रभु कष्टहारी ।। खाटूवाले....

मैं भी शरण में तुम्हारी पड़ा हूँ
तारो न तारो है मर्जी तुम्हारी ।

मेरे हृदय का अरमान है ये,
निगाहों में बस जाए सूरत तुम्हारी ।।खाटूवाले....

आठों प्रहर मैं तुम्हें ही निहारूं
बाते करुं तो करुं मैं तुम्हारी ।

हमें प्रीत तुमसे हुई श्याम प्यारे,
तुम्हें प्रीत भायी तो होगी हमारी ।।खाटूवाले....

माया में लिपटे हुए जीव हम हैं
दया की नजर हमपे करना मुरारी ।

जब भी जन्म लूं बनूं दास तेरा,
सेवा में अपनी लगाना बिहारी ।।खाटूवाले....

'नन्दू' हृदय कुंज में गूंज गूंजे
श्री राधे श्री राधे श्री राधे प्यारी ।।खाटूवाले....

।। श्री श्याम चौरासी ।।

दोहा

नागसुता सुत श्याम को, सुमिरु बारम्बार । खाटु वाले श्री श्याम, हो सब जग के दातार ।
काव्य कला जानू नहीं, बिलकुल हूँ अज्ञान । ज्ञान ध्यान मोहे दीजिए, आकर कृपा निधान ।

दोहा

गुरु-पद पंकज ध्यान धर, सुमिरि सच्चिदानन्द । श्याम चौरासी भजत हूँ, रच चौपाई छन्द ।

चौपाई

महर करो जन के सुखरासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।१।।
प्रथम शीश चरणों में नाऊँ, कृपा - दृष्टि रावरी चाऊँ ।।२।।
माफ सभी अपराध कराऊँ, आदि कथा सुछन्द रच, गाऊं ।।३।।
भक्त सुजन सुन कर हरषासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।४।।
कुरु - पाण्डव में विरोध छाया, समर महाभारत रचवाया ।।५।।
बली एक बर्बरीक आया, तीन सुवाण साथ में लाया ।।६।।
यह लखि हरि को आई हांसी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।७।।
मधुर वचन तब कृष्ण सुनाए, समर - भूमि केहि कारण आए ।।८।।
तीन बाण धनु कन्ध सुहाए, अजब अनोखा रुप बनाए ।।९।।
बाण अपार वीर सब ल्यासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।१०।।
बर्बरीक इतने दल माहीं, तीन बाण की गिनती नांही ।।११।।
योधा एक - से - एक निराले, वीर बहादुर, अति मतवाले ।।१२।।
समर सभी मिल कठिन मचासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।१३।।
बर्बरीक, मम कहना मानो, समर - भूमि तुम खेल न जानो ।।१४।।
भीष्म, द्रोण, कृप आदि जुझारा, जिन से पारथ का मन हारा ।।१५।।
तुम कहां पेश इन्हीं से पासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।१६।।
बर्बरीक, हरि से यों कहता समर देखना मैं हूँ चाहता ।।१७।।
कौन बली, रण - सूर निहारूं, बीर बहादुर कौन - जुझारूं ।।१८।।
तीन लोक त्रिबाण से मारूं, हंसता रहूँ कभी नहिं हारूं ।।१९।।
सत्य कहूँ, हरि, झूठ न जानो, दोनों दल एक तरफ हों - मानो ।।२०।।
एक बाण दल दोउ खपासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।२१।।
बर्बरीक से हरि फरमावे, तुम्हारी बात समझ नहीं आवे ।।२२।।
प्राण बचाओ तुम घर जाओ, क्यों नादानपना दिखलाओ ।।२३।।

तुम्हारी जान मुफ्त में जासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३
यदि विश्वास न तुम्हें मुरारी, तो कर लीजै जांच हमारी ।।३
यह सुन, कृष्ण बहुत हरषाये, बर्बरीक से वचन सुनाये ।।३
मैं अब लेऊँ परीक्षा खासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३
पात विटप के सभी निहारो, बैंध एक शर से सब डारो ।।३
कह इतना, इक पात मुरारी, दबा लिया पग तले करारी ।।३
अजब रची माया अविनाशी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३
बर्बरीक धनु बाण चढ़ाया, जानी जाय न हरि की माया ।।३
विटप निहार, बली मुसकाया, अजित, अमर, अहिलवती - जाया ।।३
बली सुमरी शिव, बाण चलासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३३
बाण बली ने अजब चलाया, पत्ते बैंध विटप के आया ।।३४
गिरा कृष्ण के चरणों माहीं, बींधा पात, हरि चरण हटाई ।।३५
इन से कौन फते किमि पासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३६
कृष्ण बली से कहै - बताओ, किस दल की तुम जीत कराओ ।।३७
बली हार का दल बतलाया, यह सुन, कृष्ण सनका खाया ।।३८
विजय किस तरह पारथ पासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।३९
छल करना तब कृष्ण विचारा, बली से बोले नन्द कुमारा ।।४०
ना जाने क्या ज्ञान तुम्हारा, कहना मानो बली हमारा ।।४१
हो निज तरफ नाम पा जासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।४२
कहे बर्बरीक - कृष्ण, हमारा, टूट न सकता प्रण है करारा ।।४३
मांगे दान, उसे मैं देता, हारा देख सहारा देता ।।४४
सत्य कहूँ, ना झूठ जरा सी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।४५
बेशक वीर, बहादूर तुम हो, जंचते दानी हमें न तुम हो ।।४६
कहे बर्बरीक - हरि, बताओ, तुमको चाहिए क्या, फरमाओ ।।४७
जो मांगे सो हम से, पासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।४८
बली अगर तुम सच्चे दानी, तो मैं तुम से कहूँ बखानी ।।४९
समर - भूमि बलि देने खातिर, शीश चाहिए एक बहादुर ।।५०
शीश - दान दे, नाम कमासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।५१
हम, तुम, अर्जुन तीनों माहीं, शीश - दान दे, को बलदाई ।।५२
जिस को आप योग्य बतलावें, वही शीश बलिदान चढ़ावें ।।५३
आवागमन मिटै चौरासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।५४
अर्जुन नाम समर में पावे, तुम बिन सारथी कौन कहावे ।।५५

मम सिर दान दियो भगवाना, भारत देखन मन ललचाना ।।५६।।
शीश - शिखर गिरि पर धर वासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।५७।।
शीश - दान बर्बरीक दिया है, हरि ने गिरि पर धरा दिया है ।।५८।।
समर अठारह रोज हुआ है, कुरु - दल सारा नाश हुआ है ।।५९।।
विजय - पताका पाण्डु फैरासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।६०।।
भीम, नकुल, सहदेवा, पारथ, करते निज तारीफ अकारथ ।।६१।।
यों सोचे मन में यदुराया, इनके दिल अभिमान है छाया ।।६२।।
हरि भक्तों का दुःख मिटासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।६३।।
पारथ, भीम आदि बलधारी, से यों बोले गिरवर धारी ।।६४।।
किसने विजय समर में पाई, पूछो सिर बर्बरीक से भाई ।।६५।।
सत्य बात सिर सभी बतासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।६६।।
हरि सबके संग ले गिरिवर पर, सिर बैठा था जहां शिखर पर ।।६७।।
जा पहुँचे झटपट नन्दलाला, पुनि पूछा सिर से सब हाला ।।६८।।
सिरदानी है खुद अविनाशी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।६९।।
हरि यों कहैं-सही फरमाओ, समर - जीत है कौन बताओ ।।७०।।
बली कहै-मैं सही बताऊँ, नहि पितु, चाचा बली, न ताऊ ।।७१।।
भगवत् ने पाई शाबासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।७२।।
चक्र सुदर्शन है बलदाई, काट रहा था दल जिमि काई ।।७३।।
रुप द्रोपदी काली का धर, हो विकराल, कर में ले खप्पर ।।७४।।
भर - भर रुधिर पिये थी प्यासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।७५।।
मैंने जो कुछ समर निहारा, सत्य सुनाया हल है सारा ।।७६।।
सत्य वचन सुन कर यदुराई, वर दीन्हा सिर को हरषाई ।।७७।।
श्याम रुप मम धाम पुजासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।७८।।
कलि में तुमको श्याम कन्हाई, पूजेंगे सब लोग लुगाई ।।७९।।
मन - कर्म - वचन से जो ध्यायेंगे, मन - वांछित फल सब पायेंगे ।।८०।।
जन पतित सद्गित पा जासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।८१।।
निर्धन को धनवान बनाना, पत्नी - गोदमें सुमन खिलाना ।।८२।।
सब भक्त है, शरण तिहारी, श्रीपति, यदुपति, कुन्ज - बिहारी ।।८३।।
सब सुखदायक आनन्द - रासी, सांवल शाः खाटू के वासी ।।८४।।

दोहा

श्याम चौरासी है रची, भक्त जनन के हेतु । सेवक निशि-वासर पढ़े, सकल सुमंगल देतु ।।
लख चौरासी छूटिये, श्याम चौरासी गाय । अछत चार फल पाय कर, आवागमन मिटाय ।।